कृषि विज्ञान केन्द्र, बोकारो

मसूर की उन्नत खेती

लेखक –

1. **डॉ0 रंजय कुमार सिंह, वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केन्द्र. बोकारो**
2. **डॉ0 डीवी सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, अटारी पटना**
3. **डॉ0 मोनोरूल्लाह, प्रधान वैज्ञानिक, अटारी, पटना**
4. **डॉ0 सुषमा सरोज सुरीन, वैज्ञानिक (सस्स), कृषि विज्ञान केन्द्र. बोकारो**
5. **मो0 जुनैद आलम, कृषि विज्ञान केन्द्र. बोकारो**

मार्गदर्शन –डॉ0 रेखा सिन्हा, निदेशक प्रसार शिक्षा, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची

आभार

भाकृअनुप - कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पटना (जोन-IV)

मसूर रबी मौसम में होने वाली एक महत्वपूर्ण बोकारो जिला की दलहनी फसल है। यहां की ठंडी और हल्की शुष्क जलवायु, साथ ही दोमट या बलुई दोमट मिट्टी, मसूर की अच्छी पैदावार के लिए उपयुक्त है। मसूर में 25–26 प्रतिशत तक प्रोटीन पाया जाता है। यही कारण है कि इसे 'गरीबों का मांस' भी कहा जाता है। मसूर के दाल खाने से कुपोषण की समस्या भी बहुत हद तक दूर हो जाती है। मसूर खाने से परिवार को अच्छा पोषण मिलता है और इसकी खेती से किसानों को अतिरिक्त आमदनी भी होती है। मसूर की खेती से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है, क्योंकि इसकी जड़ों में राइजोबियम नामक जीवाणु होते हैं, जो हवा से नाइट्रोजन लेकर मिट्टी में मिलाते हैं। इससे गेहूं या धान जैसी अगली फसलों को भी फायदा मिलता है और रसायनिक उर्वरक की जरूरत कम हो जाती है।

किसान भाई अपने फसल चक्र में मसूर को शामिल करके कम लागत में अच्छी आमदनी पा सकते हैं। इस फोल्डर में बोकारो की जलवायु, मिट्टी और किसानों की जरूरतों के अनुसार मसूर की उन्नत खेती की पूरी जानकारी दी गई है, जिससे किसान भाई अनुशंसीत प्रक्रिया, उन्नत प्रभेद अपनाकर मसूर की खेती से अच्छी आमदनी कमा सकते हैं।

- औसत उत्पादकतारू 900–950 किग्रा/हेक्टेयर।
- पोषण– 25–26प्रतिशल प्रोटीन, 1प्रतिशत वसा, 60 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, उच्च आयरन एवं फोलिक एसिड।
- राइजोबियम जीवाणु प्रति हेक्टेयर 50ढ्60 किग्रा नाइट्रोजन स्थिर करते हैं
- मसूर के बाद अगली फसल की उत्पादकता में 12–15 प्रतिशत वृद्धि देखी गई है

उन्नत किस्में

प्रमुख किस्में एवं उनकी उत्पादकता

किस्म	औसत उपज (क्विंटल/हेक्टेयर)	विशेषताएँ	अनुशंसित क्षेत्र
HUL 57	20–22	विल्ट प्रतिरोधी	उत्तर प्रदेश, बिहार
पंत मसूर 5	18–20	उच्च उपज	मध्य भारत
K 75 (मल्लिका)	22–24	बड़े दाने, उच्च बाजार	पंजाब, हरियाणा
WBL 77	18–19	जल्दी पकने वाली	पूर्वी भारत

बीजोपचार

- कवकनाशी– 2.5ग्राम थीरम+ 1ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किग्रा बीज
- जैविकः राइजोबियम कल्चर

पोषण, खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

तत्व	मात्रा (किग्राध्हेक्टेयर)	स्रोत	भूमिका
नाइट्रोजन	15–20	यूरियाध्डीएपी	प्रारंभिक वृद्धि
फास्फोरस	40–60	डीएपीध्एसएसपी	जड़ध्फली विकास
गंधक	20	एसएसपीध्सल्फर	प्रोटीन संश्लेषण
पोटाश	20–25 (यदि कम हो)	म्यूरेट अ०फ पोटाश	दाना गुणवत्ता

खरपतवार एवं रोग प्रबंधन

खरपतवार नियंत्रण

- 0–60 दिन में खरपतवार नियंत्रण न करने पर उपज में 30–40प्रतिशत तक कमी होने की संभावना रहती है।
- इसके नियंत्रण के लिए पेंडीमेथालिन (1.0 किग्रा/हेक्टेयर) का छिड़काव बुआई के पूर्व/ तुरंत बाद करें।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

रोग	**लक्षण**	**प्रकोप दर (%)**	**नियंत्रण उपाय**
उकठा	पीली होकर पौधा अचानक मुरझाकर सूख जाता है।	8–10	प्रतिरोधी किस्में, बीजोपचार, गहरी जुताई
झुलसा	पत्तियों और फलियों पर भूरे–नारंगी रंग के छोटे धब्बे	6–8	मेन्कोजेब (2.0 किग्रा/हेक्टेयर) छिड़काव
तुलसिता	पत्तियों पर सफेद चूर्ण जैसा	5–7	घुलनशील गंधक का छिड़काव

	जमाव		

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

कीट	लक्षण	प्रकोप दर (प्रतिशत)	नियंत्रण उपाय
माहू	छोटे, हरे–पीले कीट जो पत्तियों का रस चूसते हैं।	10–12	इमिडाक्लोप्रिड (0.5 मि.ली./लीटर), नीम तेल
फली छेदक	फली छेदकफलियों में छेद करके दानों को खाते हैं।	7–9	इमामेक्टिन बेंजोएट (0.5 ग्राम/लीटर) छिड़काव
कटुआ कीट	रात में छोटे पौधों को तने से काट देते हैं।	4–6	क्लोरपाइरीफास धूल, जैविक कवक

कटाई, गहाई एवं भंडारण

- 80–85 प्रतिशत फलियाँ पकने पर कटाई करेंय अधिक देरी से 10–15 प्रतिशत दाना झड़ सकता है।
- भंडारण हेतु 10प्रतिशत से कम नमी आवश्यक, अन्यथा भंडारण कीटों का प्रकोप बढ़ता है।

आर्थिक विश्लेषण एवं लाभ यदि किसान भाई अनुशंसित सस्य प्रक्रिया उन्नत प्रभेद का उपयोग कर खेती करें तो मसूर की खेती लाभदायक हो सकती है।

- औसत उत्पादन लागत– ₹20,000–22,000/हेक्टेयर
- औसत उपज– 18–22 क्विंटल/हेक्टेयर
- औसत बाजार मूल्य (2023): ₹6,000–7,000/क्विंटल
- शुद्ध लाभ– ₹80,000–1,10,000/हेक्टेयर (बाजार दर व उपज के अनुसार)
- समय पर बुवाई से उपज में 12–15प्रतिशत वृद्धि।
- संतुलित पोषण से 18–20प्रतिशत अधिक उपज।
- बीजोपचार से रोग प्रकोप में 80–90प्रतिशत कमी।
- फली बनते समय कीट नियंत्रण से 10–12प्रतिशत उपज सुरक्षा।